नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में अभिविन्यास पाठ्यक्रम

आचरण, व्यवहार को प्रभावित करती है संस्कृति – कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा, 24 मई 2018: संस्कृति हमारे आचरण और व्यवहार को प्रभावित करती है, वह हमारी भावनाओं को रचती और गढ़ती है। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने 'संस्कृति, भाषा और मन' विषय पर बोलते हुए व्यक्त किये। वे विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, पंडित मदन मोहन मालवीय शिक्षक एवं शिक्षण

अभियान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत संचालित विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में 14 मई से 10 जून तक आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम में बतौर विशेष वक्तव्य दे रहे थे। अकादमिक भवन के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के प्रो. अवधेश कुमार तथा कार्यक्रम संयोजक डॉ. शिरीष पाल सिंह मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग के सहायक प्रोफेसर लेखराम दन्नाना ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यायल के शिक्षकों सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के शिक्षक उपस्थित थे।

प्रो. मिश्र ने मंगलवार, 22 मई को दिए अपने विशेष व्याख्यान में कहा कि संस्कृति भाषा और मन एक दुसरे के पूरक है। संस्कृति का प्रवाह चलता रहता है। वह रीति रिवाजों में जीवित रहता है। संस्कृति में निरंतरता होती है, वह बदलाव लाती रहती है। एक संस्कृति समाप्त होती है तो दुसरी शुरू होती है। उन्होंने कहा कि भाषा जीवित रहेगी तो संस्कृति जीवित रह

सकती है। मनुष्य को कैसे होना चाहिए इसकी सीख हमें संस्कृति से मिलती है। वह अलग होते हुए भी अपनी जगह ठीक होती है। संस्कृति का अपना एजंडा होता है और वह खान-पान, शादी-ब्याह और रहन-सहन आदि में दिखायी पडता है।

भाषा और शब्द का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि शब्द प्रयोग में आने से ही उसका अर्थ है। समाज शब्द के प्रयोगा का व्याकरण तक करता है। हमारी भाषाएं व्यवस्थाओं की व्यवस्था है। भाषा की महत्वपूर्ण खूबी उसकी सर्जना ही है। हम जो अक्षर लिखते है उस हर अक्षर का भाव नया होता है। उन्होंने कहा कि संस्कृति भाषा का रिश्ता एक दुसरे को प्रभावित करता है।